class 8th sanskrit book solution | रविषष्ठी – व्रतोत्सवः

पाठ 13 – रविषष्ठी – व्रतोत्सवः

रविषष्ठी – व्रतोत्सवः
(सन्धि , विभक्ति)
[मूलतः दक्षिण विहार.....परिचय दिया गया है] **SabDekho.in**

प्राकृतिक पदार्थेषु सूर्यः सर्वाधिकः तेजस्वी.....विशिष्टता वर्तते।

अर्थ – प्राकृतिक पदार्थों में सूर्य सबसे अधिक तेजस्वी और आरोग्यपद माना जाता है । इसमें सभी जीव , प्राणी और वनस्पतियाँ (पेड़ – पौधे) प्राण को पाते हैं । इसकी उपयोगिता को विचार कर देव रुप से इसको लोग पूजते हैं । प्राचीन काल से सूर्य भगवान पूजे जाते हैं । सूर्य के पूजन में कोई पुरोहित मध्यस्थ (विचौलिया) नहीं होता है यह इस व्रत को विशेषता है ।

कार्तिको मासः वर्षाशीतयोः .....अर्घ्यदानं कुर्वन्ति ।

अर्थ– कार्तिक मास वर्षा और शौत के बीच में होता है । उसी प्रकार चैत्र मास शीत और ग्रीष्म के सन्धि काल में होता है । संधिकाल में स्थित ये दोनों मासों में अनेक रोग , बुखार , खाँसी आदि उत्पन्न होते हैं । वहाँ रोगों के विनाश के लिए उपवास आवश्यक है । उपवास छठ पर्व में अनिवार्य रूप से होता है । अतः इस व्रत का वैज्ञानिक महत्व है । चैत्र मास में सूर्य प्रकाश से गेहूँ आदि अन्न पकते हैं । उनका प्रयोग इस व्रत के नैवेद्य (प्रसादी) के लिए होता है । इसीलिए चैत्र कालिक व्रत उत्सव प्रायः शहरों आयोजित होता है । सब तरह से (दोनों मास के व्रत में) तालाब या नदी रूपी जलाशय इस व्रत में आवश्यक है । सागर तट पर स्थित लोग सागर में भी स्नान कर अर्घ्य दान करते हैं

यस्मिन् मासे रविषष्ठी व्रतोत्सवः..... अपरेभ्यश्च प्रयच्छन्ति ।

अर्थ – जिस मास में छठ पर्व आयोजित होता है । उसमें उस परिवार के लोग प्रथम दिवस से ही नहीं खाने योग्य पदार्थों को खाना वर्जित हो जाता है । शुक्ल पक्ष के चौथे दिन संयत (नहाय खाय) नामक क्रियाकलाप प्रारम्भ होता है । उस दिन स्नान कर पवित्र सिद्ध अन – भात आदि पकाये जाते हैं । प्रियजन को भी व्रती भोजन कराते हैं । वस्तुतः उसी दिन में संयम (नियम) प्रारम्भ होता है । पांचवें दिन एक बार ही व्रती लोग खीर और रोटी सूर्यास्त के बाद खाते हैं । इष्टजनों (मित्र वर्गों) को भी भोजन कराया जाता है । इसके बाद छठे दिन सम्पूर्ण दिन व्रतो लोग निराहार रहकर सायंकाल में सूपों में फल रखकर और दीपक जलाकर सूर्य के लिए अर्घ्यदान करते हैं । यह दृश्य बहुत पवित्र और मनोहर होता है । रात्री में जमीन पर सोकर व्रती लोग पुनः प्रातःकाल में सातवें दिन उदयमान (उगते हुए) सूर्य को स्नान करके अध्यंदान पूर्व दिन के तरह हो करते हैं । उसके बाद पारण किया जाता है । व्रती लोग स्वयं प्रसाद ग्रहण करते हैं और दूसरों को भी देते हैं ।

इत्थं रविषष्ठी व्रतोत्सवः..... वर्धमानः दृश्यते ।

अर्थ – इस प्रकार छठ पर्व सूर्य उपासना का महत्वपूर्ण अवसर है । वस्तुत : इसमें षष्ठी देव का पूजन संतान लाभ के लिए तथा सूर्य का पूजन आरोग्यता के लिए होता है । दोनों का पूजन मिश्रण रूप यह व्रत है । क्रमशः इसका प्रसार बढ़ता हुआ दिखाई पड़ रहा है ।

https://www.evidyarthi.in/

शब्दार्थ –

प्राकृतिकपदार्थेषु = प्राकृतिक पदार्थों में । सर्वाधिकः = अत्यधिक , सबसे बढ़कर । तेजस्वी = तेजस्वी , आत्मबल से युक्त , ओज से युक्त , कर्जावान् (व्यक्ति) । आरोग्यापदः = नीरोगता प्रदान करने वाला । मन्यते = माना जाता है । लभन्ते = प्राप्त करते हैं । विचार्य विचार करके , सोचकर । देवरूपेण = देवता के रूप में । पूजयन्ति = पूजते हैं । प्राचीनकालात् = पुराने समय से । पूजने = पूजा करने के समय में । कश्चित् = कोई । मध्यस्थः = बीच में रहने वाला , बिचौलिया । अपेक्षितः = आवश्यक । शीतः = जाड़ा । अवस्थितः = स्थित ।अमृता भाग -3 75 एवमेव (एवम् + एव) = इसी प्रकार , ऐसा ही । ग्रीष्मः = गर्मी । सन्धिकालः = जोड़नेवाला / बीच वाला समय । अनयोः = दोनों में । ज्वरकासादयः = बुखार , खाँसी आदि । प्रभवन्ति = उत्पन्न होते हैं । विनाशाय = विनाश के लिए । चैत्रमासे = चैत महीने में । अन्नानि = अन्न । पच्यन्ते = पकायें जाते हैं । वितप्तानि = धूप में सुखाये हुए । पच्यते = पकाये जाते हैं । गोधूमः = गेहूँ । नैवेद्याय = पूजा की सामग्री के लिए । ग्रामेषु = गाँवों में । कार्तिकालिकाः = कार्तिक माह वाला । नगरेषु = नगरों / शहरों । बहुधा = प्रायः । सर्वथा = सब तरह के । तडागः = तालाब । सागरतटेषु = समुद्र के किनारे । स्नात्वा = स्नान करके । अर्घ्यदानम् = चढ़ावा , पूजन सामग्री का दान । यस्मिन् = जिसमें । अभक्ष्याः = नहीं खाने योग्य । वर्जिताः = मना किये हुए । तदा = तब । सिद्धान्नम् = पका हुआ अन्न । ओदनादिकम् (ओदन + आदिकम्) = भात आदि । इष्टजनानपि (इष्टजनान् + अपि) = प्रिय लोगों को भी । भोजयन्ति = खिलाते हैं । प्रारभते = शुरू होता है । पायसम् = खीर । रोटिका = रोटी । अनन्तरम् = बाद में , पश्चात् । कुर्वन्ति = करते हैं । ततः = इसके बाद । अनाहाराः = बिना भोजन किए । धारयित्वा = रखकर । प्रज्चाल्य = जलाकर । शयित्वा = सोकर । उदीयमानाय = उगते हुए को । पूर्ववत् = पहले की तरह । क्रियते = किया जाता है । अपरेभ्यः = दूसरों को । प्रयच्छन्ति = देते हैं । इत्थम् = इस प्रकार । वर्धमानः = बढ़ता हुआ । दृश्यते = दिखलायी देता है , देती है ।

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः

आरोग्यप्रदश्च = आरोग्यप्रदः + च (विसर्ग सन्धि) । कश्चित् = कः + चित् (विसर्ग सन्धि) ।

एवमेव = एवम् + एव ।

व्रतोत्सव : = व्रत + उत्सवः (गुण सन्धि) ।

तस्मादेव = तस्मात् + एव (व्यञ्जन सन्धि) । एकवारमेव = एकवारम् + एव ।

सूर्यास्तादनन्तरम् = सूर्यास्यात् + अनन्तरम् (व्यञ्जन सन्धि) ।

अपरेभ्यश्च = अपरेभ्यः + च (विसर्ग सन्धि) ।

प्रकृति – प्रत्यय – विभाग :

मन्यते =√मन् लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन लभन्ते =√लभ् लट् प्रकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन विचार्य =वि +√ चर + ल्यप्

पूजयन्ति =√पूज् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन पूज्यते=√पूज + यक् (य) कर्मवाच्य , लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन

अवस्थितः=अव + √स्था + क्त पुल्लिङ्ग , एकवचन

प्रभवन्ति=प्र + √भू लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन

प्राप्नोति=प्र + √आप् लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन

पच्यन्ते=√पच + यक , कर्मवाच्य , प्रथम पुरुष , बहुवचन

प्रसिद्धः=प्र + √सिध् + क्त , पुंल्लिङ्ग , एकवचन आयोजित : =आ + √यूज् + णिच् + क्त , पुल्लिङ्ग , एकवचन

स्नात्वा= √स्ना + क्त्वा

https://www.evidyarthi.in/

कुर्वन्ति = √कृ लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
वर्जिताः = √वृज + क्त , पुं . / स्त्री . , बहुवचन स्नात्वा =√स्ना + क्त्वा
भोजयन्ति =√भुज + णिच् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
प्रारभते =प्र + आ + √रभ् लट् लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन
शयित्वा =शीड़ + क्त्वा
प्रयच्छन्ति = प्र +√ दाण लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
वर्धमानः = √वृध + शानच् पल्लिङ्ग , एकवचन
दृश्यते= √दृश् + यक् (य) कर्मवाच्य , प्रथम पुरुष , एकवचन

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/